आए तब दे तो वह कैसा माना जाए? समझदार व्यक्ति तो स्वयं के पास पैसे हो तो लेने आए उससे पहले स्वयं ही जाकर स्वेच्छा से आनंदपूर्वक पूरी रकम दे देता है। एक साथ नहीं दे सकता हो तो थोड़े-थोड़े देकर भी पूरे करे। वैसे साधक भी कर्म उदय में आए, उसके पहले ही यथाशक्ति खपाने का प्रयत्न करता है। यदि मन की निर्बलता से कर्म उदय में आने के पहले नाश करने का प्रयत्न न करे तो भी स्वयं कर्म उदय में आने पर उसे समभाव पूर्वक सहन करता है। क्योंकि वह समझता है कि इच्छा या अनिच्छा से मुझे दु:ख तो सहन करना ही है, अत: मन कलुषित किए बिना सहन करना ही अच्छा है।

इससे भावी नए कर्मों का बंध रुक जाता है। उदय में आते कर्म समभाव पूर्वक सहन किए जाए और नए कर्म नहीं बंधे तो एक दिन ऐसा आता है कि सभी कर्मों का नाश हो जाता है और आत्मा दु:ख से सर्वथा मुक्त हो जाता है। संक्षेप में, जिसे दु:ख से सर्वथा मुक्त होना हो, उसे तप आदि द्वारा पूर्व में बांधे हुए कर्मों को नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा न हो सके तो भी स्वयं उदय में आए हुए कर्मों को तो समभावपूर्वक ही सहन कर लेना चाहिए, अन्यथा कर्मों और दु:खों की परंपरा चलती ही रहेगी।

सातावेदनीय कर्म का आस्रव-

भूत-व्रत्यनुकम्पा दानं सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥६-१३॥

भूत-अनुकंपा, व्रती-अनुकंपा, दान, सरागसंयम, आदि शब्द से संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप (ये सरागसंयमादि रूप योग है), क्षमा और शौच; ये सातावेदनीय कर्म के आस्रव हैं।

(1) भूत-अनुकंपा-भूत यानी जीव। सर्व जीवों के प्रति अनुकंपा = दया के परिणाम।

(2) व्रती-अनुकंपा - व्रती के दो प्रकार हैं - अगारी और अणगार। गृहस्थ अवस्था में रहकर स्थूल प्राणातिपात आदि पापों का त्याग करने वाले देशविरति श्रावक अगारी व्रती हैं। सर्व प्रकार के पापों का त्याग करने वाले पंचमहाव्रतधारी साधु अणगार व्रती हैं। दोनों प्रकार के व्रती की भक्त-पान, वस्त्र, पात्र, आश्रय, औषध आदि से अनुकंपा = भक्ति करना व्रती अनुकंपा है।

(3) दान - स्व-पर के प्रति अनुग्रह बुद्धि से स्वयं की वस्तु पर को देना।

(4) सरागसंयम - संज्वलन लोभादि कषाय राग हैं। राग से सहित, वह सराग संयम यानी प्राणातिपात आदि पापों से निवृत्ति। राग सहित संयम, वह सराग संयम अथवा सराग (राग सहित) व्यक्ति का संयम सरागसंयम अर्थात् संज्वलन कषाय के उदय वाले मुनियों का संयम सराग संयम है।

(5) संयमासंयम - जिसमें आंशिक संयम हो और आंशिक असंयम हो, वह संयमासंयम अर्थात् देशविरति।

(6) अकामनिर्जरा - काम यानी इच्छा, निर्जरा यानी कर्मों का क्षय। स्वेच्छा से कर्मों का नाश, वह सकाम निर्जरा और इच्छा बिना कर्मों का नाश वह अकामनिर्जरा। इच्छा न होने पर भी परतंत्रता, अनुरोध, साधन का अभाव, रोग वगैरह के कारण से पाप प्रवृत्ति न करे, विषयसुख का सेवन न करे, आए हुए कष्ट शांति से सहन न करे इत्यादि से अकामनिर्जरा होती है।